महिलाओं ने साझा की कामयाबी की गाथा

जैतहरी। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हिंदुस्तान पावर सीएसआर शाखा की ओर से आयोजित समारोह में महिलाओं ने भारी संख्या में उपस्थित होकर अपने आर्थिक-सामाजिक सशक्तिकरण के लिए दमखम दिखाया। महिला प्रतिभाओं की गहरी छाप वाले इस समारोह में सीएसआर टीम की पहल पर गठित महिला स्व-सहायता समूहों ने अपनी कामयाबी की प्रेरक कहानियां साझा कीं। कार्यक्रम का शुभारंभ एक रैली से हुआ, जिसमें महिलाओं की जोरदार भागीदारी रही। जैतहरी सिद्ध बाबा पहाड़ी से टकहुली तक निकली इस रैली में संदेश बैनरों से लैस महिलाओं ने सशक्तिकरण और विकास के लिए एकजुटता का परिचय दिया। 'एक कदम प्रगति का, एक कदम स्वाबलंबन का' थीम पर आधारित कार्यक्रम में स्व-सहायता समूहों की सैकड़ों सदस्यों ने भाग लिया। टकहुली में कार्यक्रम स्थल पर महिला सशक्तिकरण का ध्वज फहराये जाने के बाद महिलाओं ने सशक्तिकरण की शपथ ली। यह कार्यक्रम विकास के विविध क्षेत्रों में भागीदारी के लिए महिलाओं को जागरूक बनाने के उद्देश्य से किया गया। 38 गांवों के 50 स्व-सहायता समूहों की महिला सदस्यों की भारी मौजूदगी में विशिष्ट अतिथि की हैसियत से हिंदुस्तान पावर सीएसआर प्रमुख रानू कुलश्रेष्ठ ने कहा,'' कोई भी समाज महिलाओं के समुचित उत्थान के बगैर विकसित नहीं हो सकता। महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी गहरी छाप छोड़ने की क्षमता रखती हैं, बस उन्हें अवसर और संसाधन की जरूरत है। हम देश की इस आधी आबादी के उत्थान में योगदान देने के लिए प्रयासरत हैं। स्व-सहायता समूहों का गठन इसी की एक कड़ी है।'' कंपनी के स्थानीय सीएसआर प्रमुख आशीष आनंद ने समूहों की कामयाबी की चर्चा करते हुए कहा कि अभी तक ये समूह 18 लाख रूपये से अधिक का लेन-देन कर चुके हैं। समूह की महिलाओं को दो प्रतिशत ब्याज पर छोटे-मोटे कर्ज की सहूलियत मिलने से जरूरतें पूरी करना आसान हो गया है। यह मॉडल आज दर्जनों गांवों में माइक्रो फाइनेंश का आदर्श नमूना बन गया है। समूह उधारी, ब्याज और अन्य लेखा-जोखा के प्रति सजग रहता है। समूहों की सावधिक बैठकों में चुनौतियों पर चर्चा होती है। ये समूह सिर्फ महिला उत्थान तक सीमित नहीं हैं। कृषि, स्वास्थ्य, साफ-सफाई, सामाजिक जागरूकता आदि क्षेत्रों में भी ये समूह सक्रिय हैं। कार्यक्रम में महिलाओं ने गीत-संगीत, खेल और नाट्य में अपनी प्रतिभाओं का भी परिचय दिया। महिला-पुरूष भेदभाव, लैंगिक पूर्वाग्रह, पुरूष वर्चस्ववादी सोच के खिलाफ संदेश देने वाले नुक्कड़ नाटकों को खूब सराहना मिली। इनके किरदार स्थानीय महिला और पुरूष ही बने। कई स्व-सहायता समूहों, महिला प्रतिभाओं को उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया।